UNIVERSITY OF DELHI

DEPARTMENT : HINDI

COURSE NAME: BA (HONS.) हिंदी पत्रकारिता एवं जनसंचार

(SEMESTER -I)

Based on
Undergraduate Curriculum Framework 2022 (UGCF)
(Effective from Academic Year 2022-23)

DSC & GE

Course Title	Nature of the Course	Total Credits	Components			Eligibility Criteria/ Prerequisite	**Contents of the course and reference is in**
			Lecture	Tutorial	Practical		
जनसंचार माध्यम	DSC	4	3	1	0	As per University rules	Annexure-I
हिंदी पत्रकारिता का इतिहास	DSC	4	3	1	0	As per University rules	Annexure-II
भारतीय समाज और संचार	DSC	4	3	1	0	As per University rules	Annexure-III
(क) संस्कृति साहित्य और मीडिया अथवा (ख) फोटो पत्रकारिता	GE	4	3	1	0	As per University rules	Annexure-IV

सेमेस्टर 1

1.1 जनसंचार माध्यम (DSC-1)

Course Objective

- जनमाध्यमों की वृहद जानकारी प्रदान करना।
- जनमाध्यमों के द्वारा भारतीय ज्ञान-परम्परा का प्रसार करना।
- समाज पर प्रिंट- इलेक्ट्रोनिक माध्यमों के प्रभाव का अध्ययन।
- जनमाध्यमों की कार्यशैली का परिचय कराना।

Course Learning Outcomes

- जनमाध्यमों की तकनीक एवं प्रक्रिया संबंधी समझ विकसित होगी।
- छात्रों के संचार कौशल में वृद्धि होगी।
- सैद्धांतिक एवं प्रायोगिक कार्यों द्वारा रोज़गारपरक संभावनाएँ बढ़ेंगी।
- भारतीय ज्ञान परम्परा की समझ से छात्रों के व्यक्तित्व का सर्वांगीण विकास होगा।

1. संचार और जनसंचार 3+1 x 3 = 9 + 3 (1 से 3 सप्ताह)

- संचार- अर्थ परिभाषा, महत्त्व, संचार के प्रकार
- जनसंचार - अर्थ, स्वरूप, विशेषताएँ, संचार और जनसंचार का अंतर
- संचार की प्रक्रिया एवं प्रतिपुष्टि

2. जनमाध्यम 3+1 x 3 = 9 + 3 (4 से 6 सप्ताह)

- जनमाध्यम- अर्थ, परिभाषा और महत्त्व
- जनमाध्यमों के कार्य, प्रभाव और अपेक्षाएँ
- सामाजिक परिवर्तन और जनमाध्यम

3. मुद्रित माध्यम 3+1 x 3 = 9 + 3 (7 से 9 सप्ताह)

हिन्दी - विभाग * दिल्ली विश्वविद्यालय *

- मुद्रित माध्यम - सामान्य परिचय, समाचार पत्र और पत्रिकाओं का स्वरूप
- समाचार संकलन, प्रस्तुति एवं रिपोर्ट-लेखन
- मुद्रित माध्यमों का संगठन एवं स्वामित्व

4. इलेक्ट्रॉनिक माध्यम **3+1 x 3 = 9 + 3 (10 से 12 सप्ताह)**

- इलेक्ट्रॉनिक माध्यमों के विविध रूप - रेडियो, टेलीविजन, सिनेमा, इन्टरनेट आधारित मीडिया
- इलेक्ट्रॉनिक माध्यमों में प्रयुक्त पारिभाषिक शब्दावली - रेडियो, टेलीविजन, सिनेमा, इन्टरनेट आधारित मीडिया
- समाज और संस्कृति के विकास में इलेक्ट्रॉनिक माध्यमों की भूमिका

प्रायोगिक कार्य **3+1 x 3 = 9 + 3 (13 एवं 14 सप्ताह)**

1. किसी विषय/ क्षेत्र से जुड़ी पत्रिका की सामग्री का अध्ययन।
2. रेडियो के किसी कार्यक्रम के प्रभाव का अध्ययन।
3. टेलीविजन के किसी एक कार्यक्रम का समीक्षात्मक विश्लेषण।
4. ई-पत्र-पत्रिका अथवा न्यूज़ पोर्टल की सामग्री का अध्ययन।
5. टेलीविजन के किसी एक कार्यक्रम का सामाजिक - सांस्कृतिक प्रभाव की दृष्टि से अध्ययन।

सहायक पुस्तकें :

1. इंटरनेट पत्रकारिता, सुरेश कुमार, तक्षशिला प्रकाशन
2. पत्रकारिता का इतिहास एवं जनसंचार माध्यम, डॉ. संजीव भानावत, यूनिवर्सिटी पब्लिकेशन जयपुर

हिन्दी विभाग दिल्ली विश्वविद्यालय

3. संचार सिद्धांत की रूपरेखा, डॉ. प्रेमचंद पातंजलि, के. एल. पचौरी प्रकाशन
4. पत्रकारिता के विविध रूप, रामचंद्र तिवारी, आलेख प्रकाशन
5. समाचार अवधारणा और लेखन प्रक्रिया, सुभाष धूलिया, आनंद प्रधान, भारतीय जनसंचार संस्थान प्रकाशन
6. दूरसंचार और सूचना प्रौद्योगिकी, डी. डी. ओझा, ज्ञानगंगा प्रकाशन
7. संचार माध्यमों का वर्ग चरित्र, रेमंड विलियम्स, ग्रंथ शिल्पी प्रकाशन
8. टेलीविजन की कहानी, श्याम कश्यप और मुकेश कुमार, वाणी प्रकाशन

Teaching-Learning Process (शिक्षण प्रशिक्षण प्रक्रिया)

इस पाठ्यक्रम के अध्ययन-अध्यापन के दौरान निम्नलिखित प्रक्रिया को अपनाया जाएगा –

कक्षा में विषय आधारित व्याख्यान, सामूहिक चर्चा, सरल से जटिलतर अध्यापन की ओर उन्मुखता, जटिल विषयों पर कक्षा के अलावा विषय विशेषज्ञों के व्याख्यान और कार्यशाला का आयोजन, कक्षा में इंटरएक्टिव मोड में अध्यापन, स्मार्ट क्लासरूम का प्रयोग, टेलिविज़न के लिए समाचार बुलेटिन तैयार करना, फिल्मों का प्रोजेक्ट पर प्रदर्शन, धारवाहिकों की सामग्री का अध्ययन, लिखित परीक्षा, विशेष रिपोर्ट बनवाना, सर्वेक्षण करवाना, फील्ड अध्ययन, टेलिविज़न विज्ञापन बनवाना।

हिन्दी - विभाग
हिन्दी विश्वविद्यालय

1.2 हिंदी पत्रकारिता का इतिहास (DSC-2)

Course Objective

- हिंदी पत्रकारिता की ऐतिहासिक भूमिका के प्रति समझ विकसित करना।
- स्वतंत्रता संग्राम में हिंदी पत्र-पत्रिकाओं के योगदान से अवगत कराना।
- हिंदी पत्रकारिता के विभिन्न कालखंडों के मूल्यों से परिचित कराना।
- भारतीय बोध के विकास में हिंदी पत्रकारिता के महत्त्व की जानकारी देना।
- भारतीय स्वतंत्रता सेनानी पत्रकारों, साहित्यकारों और संपादकों के अवदान से परिचित कराना।

Course Learning Outcomes

- हिंदी पत्रकारिता के इतिहास एवं विकास के प्रति समझ विकसित होगी।
- आज़ादी की लड़ाई में हिंदी पत्रकारिता के महत्त्व से परिचित होंगे।
- स्वतंत्रता पूर्व एवं पश्चात की पत्रकारिता में आए मूल्य परिवर्तन से अवगत होंगे।
- हिंदी पत्र-पत्रिकाओं के माध्यम से भारतीय बोध का ज्ञान होगा।

1. स्वतंत्रता पूर्व हिंदी पत्रकारिता 3+1 x 3 = 9 + 3 (1 से 3 सप्ताह)

- स्वतंत्रता पूर्व की भारतीय पत्रकारिता का सामान्य परिचय
- स्वतंत्रता संग्राम और हिंदी पत्र-पत्रिकाओं की भूमिका एवं सामाजिक प्रभाव
- स्वतंत्रता पूर्व हिंदी पत्रकारिता की चुनौतियां

2. स्वतंत्रता पश्चात हिंदी पत्रकारिता 3+1 x 3 = 9 + 3 (4 से 6 सप्ताह)

- स्वतंत्रता पश्चात हिंदी पत्रकारिता का विकास एवं स्वामित्त्व
- आजादी के बाद जनतंत्र व विकास की चुनौतियां
- आपातकाल : प्रेस और अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता के सवाल

हिन्दी - विभाग
दिल्ली विश्वविद्यालय

3. आपातकाल के बाद की हिंदी पत्रकारिता। 3+1 x 3 = 9 + 3 (7 से 9 सप्ताह)

- राजनैतिक, सामाजिक एवं सांस्कृतिक परिवर्तन और हिंदी पत्र-पत्रिकाएं
- इलेक्ट्रॉनिक माध्यमों की हिंदी पत्रकारिता
- हिंदी पत्रकारिता की समाचार सामग्री

4. भूमंडलीकरण के बाद की हिंदी पत्रकारिता 3+1 x 3 = 9 + 3 (10 से 12 सप्ताह)

- भूमंडलीकरण और हिंदी पत्रकारिता - हिंदी पत्रकारिता के समक्ष चुनौतियां एवं ज्वलंत मुद्दे
- हिंदी पत्रकारिता का व्यवसायीकरण - विज्ञापन और पत्रकारिता का संबंध, पेड न्यूज, ब्रेकिंग न्यूज़, इन्फोटेनमेंट
- डिजिटलीकरण, ऑनलाइन हिंदी पत्रकारिता का स्वरूप

प्रायोगिक कार्य 3+1 x 3 = 9 + 3 (13 एवं 14 सप्ताह)

1. स्वतंत्रता आंदोलन में हिंदी पत्रकारिता की भूमिका पर रिपोर्ट, फीचर, लेख तैयार करना।
2. पत्रकारों, स्वतंत्रता सेनानियों और संपादकों पर रिपोर्ट, लेख, फीचर लेखन।
3. स्वतंत्रता सेनानी पत्रकार, संपादकों पर ब्लॉग लेखन, यूट्यूब वीडियो, पॉडकास्ट, वृत्तचित्र तैयार करना।
4. प्रेस के संदर्भ में अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता और आपातकाल पर परियोजना कार्य।

सहायक पुस्तकें :

1. हिंदी पत्रकारिता : विविध आयाम, डॉक्टर वेद प्रताप वैदिक, हिंदी बुक सेंटर
2. हिंदी पत्रिका का इतिहास, जगदीश प्रसाद चतुर्वेदी, प्रभात प्रकाशन
3. भारत में प्रेस, जी. एस. भार्गव, नेशनल बुक ट्रस्ट

हिन्दी - विभाग
हिन्दी विश्वविद्यालय

4. भारत की समाचारपत्र क्रांति, रॉबिन जेफरी, भारतीय जनसंचार संस्थान
5. मीडिया और बाजारवाद, रामशरण जोशी, राधाकृष्ण प्रकाशन
6. अम्बेडकर, गांधी और हिंदी दलित पत्रिका, अनामिका प्रकाशन, श्यौराज सिंह बेचैन
7. हिंदी पत्रकारिता और भूमंडलीकरण, विजेंद्र कुमार, नटराज प्रकाशन
8. पत्रकारिता के नए परिप्रेक्ष्य, राजकिशोर, वाणी प्रकाशन
9. भारतीय पत्रकारिता का इतिहास, जे. नटराजन, प्रकाशन विभाग
10. भारत में जनसंचार, केवल जे. कुमार, जैको पब्लिकेशन हाउस
11. भारत में प्रेस, जी. सी. भार्गव, नैशनल बुक ट्रस्ट, दिल्ली

Teaching-Learning Process (शिक्षण प्रशिक्षण प्रक्रिया)

इस पाठ्यक्रम के अध्ययन-अध्यापन के दौरान निम्नलिखित प्रक्रिया को अपनाया जाएगा –

कक्षा में विषय आधारित व्याख्यान, सामूहिक चर्चा, सरल से जटिलतर अध्यापन की ओर उन्मुखता, जटिल विषयों पर कक्षा के अलावा विषय विशेषज्ञों के व्याख्यान और कार्यशाला का आयोजन, कक्षा में इंटरएक्टिव मोड में अध्यापन, स्मार्ट क्लासरूम का प्रयोग, प्रमुख स्वतंत्रता सेनानी पत्रकारों का परिचय एवं उनके विभिन्न लेख, फीचर, स्तम्भ एवं संपादकीयों का अध्ययन, लिखित परीक्षा, विशेष रिपोर्ट बनवाना, सर्वेक्षण करवाना, फील्ड अध्ययन, कंप्यूटर पर हिंदी कोड में लिखने का अभ्यास कराना।

हिन्दी - विभाग
दिल्ली विश्वविद्यालय

1.3 भारतीय समाज और संचार (DSC-3)

Course Objective

- भारतीय समाज एवं संस्कृति की समझ विकसित करना।
- भारत की दर्शन, धर्म की विरासत से परिचित कराना
- भारतीय साहित्य एवं कला से अवगत कराना।
- भारतीय भाषाओं और भारतीय जनमानस के अंतरसंबंधों की पड़ताल करना।

Course Learning Outcomes

- भारत की सामाजिक आर्थिक सांस्कृतिक पृष्ठभूमि की समझ विकसित होगी।
- छात्रों में भारतीय समाज की संरचना और मूल्य व्यवस्था के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण निर्मित होगा।
- भारतीय धर्म, दर्शन और कलाओं की विरासत से परिचित होंगे।
- विद्यार्थी भारत के भाषिक वैविध्य के ज्ञान एवं सौंदर्य से अभिभूत होंगे।

1 भारतीय समाज **3+1 x 3 = 9 + 3 (1 से 3 सप्ताह)**

- भारतीय समाज का स्वरूप
- भारतीय समाज की मूल्य-व्यवस्था- पारिवारिक, सामाजिक, राष्ट्रीय और मानवीय
- भारतीय समाज की चुनौतियां और संभावनाएं

2 भारतीय धर्म, दर्शन और संस्कृति **3+1 x 3 = 9 + 3 (4 से 6 सप्ताह)**

- भारतीय संस्कृति की प्रमुख विशेषताएं
- प्रमुख धर्म : सामान्य परिचय
- प्रमुख भारतीय दर्शन

हिन्दी - विभाग दिल्ली विश्वविद्यालय

3 भाषा, साहित्य और कलाएँ **3+1 x 3 = 9 + 3 (7 से 9 सप्ताह)**

- प्रमुख भारतीय भाषाओं का संक्षिप्त परिचय
- महाभारत और रामचरित मानस का सामान्य परिचय
- प्रमुख कलाएँ : वास्तुकला, मूर्तिकला, चित्रकला, संगीत

4 संचार की भारतीय परंपरा **3+1 x 3 = 9 + 3 (10 से 12 सप्ताह)**

- लोकगीत, लोककथा
- लोकनृत्य, लोकनाट्य
- पारंपरिक भारतीय जनसंचार (पर्व, मेले, नुक्कड़ नाटक, कठपुतली आदि)

प्रायोगिक कार्य : **3+1 x 3 = 9 + 3 (13 एवं 14 सप्ताह)**

1. भारतीय धर्म और दर्शन से सम्बंधित महत्त्वपूर्ण ग्रंथों पर रिपोर्ट लेखन
2. किसी सांस्कृतिक कार्यक्रम की रिपोर्टिंग
3. किसी लोकनाट्य को देखना और उसका समीक्षात्मक लेखन
4. भारतीय समाज की किसी समस्या पर समाधानपरक मौलिक लेख लिखना
5. चयनित विषयों पर समूह चर्चा और परियोजना कार्य
6. प्रमुख कालजयी रचनाओं की प्रासंगिकता पर लेखन/समूह चर्चा
7. लोकनाट्य के रूप में रामलीला और रासलीला का जनसमाज पर पड़ने वाले प्रभाव का सर्वेक्षण एवं लेखन

हिन्दी - विभाग दिल्ली विश्वविद्यालय

सहायक पुस्तकें :

1. संस्कृति के चार अध्याय, रामधारी सिंह दिनकर, साहित्य अकादमी
2. भारतबोध का नया समय, प्रो. संजय द्विवेदी, यश प्रकाशन, दिल्ली
3. भारतीय कला एवं संस्कृति, वासुदेव शरण अग्रवाल, प्रभात प्रकाशन
4. लोक साहित्य की भूमिका, कृष्णदेव उपाध्याय, साहित्य भवन प्राइवेट लिमिटेड, इलाहाबाद
5. मानवमूल्य और साहित्य, धर्मवीर भारती, भारतीय ज्ञानपीठ
6. संचार और विकास, श्यामाचरण दुबे, प्रकाशन विभाग, सूचना व प्रसारण मंत्रालय भारत सरकार
7. बुद्धिस्ट कम्युनिकेशन थ्योरी - एनसाइक्लोपीडिया ऑफ कम्युनिकेशन थ्योरी, सेज पब्लिकेशन
8. को-कल्चरल थ्योरी - एनसाइक्लोपीडिया ऑफ कम्युनिकेशन थ्योरी, सेज पब्लिकेशन

Teaching-Learning Process (शिक्षण प्रशिक्षण प्रक्रिया)

इस पाठ्यक्रम के अध्ययन-अध्यापन के दौरान निम्नलिखित प्रक्रिया को अपनाया जाएगा –

कक्षा में विषय आधारित व्याख्यान, सामूहिक चर्चा, सरल से जटिलतर अध्यापन की ओर उन्मुखता, जटिल विषयों पर कक्षा के अलावा विषय विशेषज्ञों के व्याख्यान और कार्यशाला का आयोजन, कक्षा में इंटरएक्टिव मोड में अध्यापन, स्मार्ट क्लासरूम का प्रयोग, समाचार रिपोर्ट और संपादकीय आदि लिखना, भारतीय वास्तुकला, मूर्तिकला, चित्रकला आदि भारतीय विरासतों का भ्रमण एवं रिपोर्ट लेखन, प्रोजेक्ट पर प्रदर्शन, लिखित परीक्षा, विशेष रिपोर्ट बनवाना, सर्वेक्षण करवाना, फील्ड अध्ययन, विज्ञापन बनवाना, लोक कलाओं, लोक गीतों, लोक नृत्यों में भागीदारी एवं प्रदर्शन।

हिन्दी - विभाग
दिल्ली विश्वविद्यालय

1.4 (क) संस्कृति, साहित्य और मीडिया (Generic Elective)

Course Objective

- भारतीय संस्कृति, साहित्य और मीडिया की आपसी समझ विकसित करना।
- भूमंडलीकरण के पश्चात मीडिया में आए बदलावों की समीक्षा करना।
- राष्ट्रीय एवं अंतरराष्ट्रीय मुद्दों संबंधी मीडिया कवरेज का अध्ययन कराना।
- विभिन्न भारतीय परिवेश, कल्चर, सत्ता एवं राजनीति की समझ पैदा करना।

Course Learning Outcomes

- भारतीय पत्रकारिता के परिवेश की समझ विकसित होगी।
- समाज के विभिन्न पहलुओं से अवगत होंगे।
- राष्ट्रीय एवं अंतरराष्ट्रीय विचारों के प्रति समझ विकसित होगी।
- भारतीय संस्कृति, साहित्य और मीडिया के अंतरसंबंधों की समझ विकसित होगी।

1. संस्कृति अर्थ व अवधारणा 3+1 x 3 = 9 + 3 (1 से 3 सप्ताह)

- संस्कृति की अवधारणा, सभ्यता और संस्कृति
- लोक संस्कृति, पॉपुलर कल्चर, संस्कृति और सत्ता, संस्कृति और राजनीति
- संस्कृति और हाशिये का समाज, इन्टरनेट और सूचना संस्कृति

2. प्रिंट मीडिया और साहित्य 3+1 x 3 = 9 + 3 (4 से 6 सप्ताह)

- हिन्दी साहित्य और पत्रकारिता का अन्तर्संबंध
- हिंदी पत्र-पत्रिकाओं में साहित्य की स्थिति
- हिन्दी के प्रमुख साहित्यिक पत्रकारों का परिचय

3. हिन्दी मीडिया और संस्कृति। 3+1 x 3 = 9 + 3 (7 से 9 सप्ताह)

- मीडिया और संस्कृति के अन्तर्संबंध
- मीडिया का बाजार और संस्कृति

हिन्दी - विभाग दिल्ली विश्वविद्यालय

- विज्ञापन का सांस्कृतिक वर्चस्व और भाषायी संकट

4. इलेक्ट्रॉनिक मीडिया और साहित्य **3+1 x 3 = 9 + 3 (10 से 12 सप्ताह)**

- रेडियो और टेलीविज़न के साहित्य आधारित कार्यक्रम
- साहित्यिक कृतियों का सिनेमाई रूपान्तरण
- साहित्यिक ई-पत्रिकाएँ एवं साहित्यिक वेबसाइट्स

प्रायोगिक कार्य : **3+1 x 3 = 9 + 3 (13 एवं 14 सप्ताह)**

1. लोक संस्कृति की जानकारी के लिए किसी एक गाँव का सर्वे के आधार पर रिपोर्ट प्रस्तुत करना
2. साहित्य आधारित किन्हीं दो फिल्मों का अध्ययन व उनकी समीक्षा
3. साहित्य आधारित किसी टेलीविजन धारावाहिक की समीक्षा
4. हिन्दी के प्रमुख साहित्यिक पत्रकारों की सूची व उनके अवदान पर एक परियोजना कार्य
5. फिल्म पूरब-पश्चिम, मदर इंडिया, परदेश, मशाल, पेज-श्री, फिर भी दिल है हिन्दुस्तानी आदि का समीक्षात्मक विश्लेषण

सहायक पुस्तकें

1. संस्कृति के चार अध्याय, रामधारी सिंह दिनकर, लोक भारती प्रकाशन
2. मानव और संस्कृति, श्यामाचरण दुबे, राजकमल प्रकाशन
3. हिंदी सिनेमा आदि से अनंत, प्रहलाद अग्रवाल, साहित्य भंडारी
4. हिंदी साहित्य और सिनेमा, विवेक दुबे, संजय प्रकाशन
5. सिनेमा और संस्कृति, राही मासूम रजा, वाणी प्रकाशन
6. मीडिया में सामाजिक लोकतंत्र की तलाश, श्यौराज सिंह बेचैन, अनामिका प्रकाशन

हिन्दी - विभाग
दिल्ली विश्वविद्यालय

7. संस्कृति, जनसंचार और बाज़ार, नन्द भारद्वाज, सामयिक प्रकाशन

Teaching-Learning Process (शिक्षण-प्रशिक्षण प्रक्रिया)

इस पाठ्यक्रम के अध्ययन-अध्यापन के दौरान निम्नलिखित प्रक्रिया को अपनाया जाएगा –

कक्षा में विषय आधारित व्याख्यान, सामूहिक चर्चा, सरल से जटिलतर अध्यापन की ओर उन्मुखता, जटिल विषयों पर कक्षा के अलावा विषय विशेषज्ञों के व्याख्यान और कार्यशाला का आयोजन, कक्षा में इंटरएक्टिव मोड में अध्यापन, स्मार्ट क्लासरूम का प्रयोग, समाचार रिपोर्ट, फीचर, स्तम्भ लेखन प्रोजेक्ट पर प्रदर्शन, भारतीय संस्कृति से रेडियो, टेलिविज़न कार्यक्रमों एवं विज्ञापनों का अध्ययन, लिखित परीक्षा, विशेष रिपोर्ट बनवाना, सर्वेक्षण करवाना, फील्ड अध्ययन।

हिन्दी - विभाग
दिल्ली विश्वविद्यालय

अथवा

1.4 (ख) फोटो पत्रकारिता (Generic Elective)

Course Objective

- फ़ोटो पत्रकारिता की समझ विकसित करना।
- व्यावहारिक एवं सैद्धांतिक ज्ञान देना।
- फ़ोटोग्राफ़ी के रचनात्मक पहलुओं का ज्ञान कराना।
- विभिन्न जनसंचार माध्यमों में फ़ोटो के उपयोग एवं महत्त्व से अवगत कराना।

Course Learning Outcomes

- फ़ोटो पत्रकारिता का व्यावहारिक ज्ञान विकसित होगा।
- छात्रों में रोज़गार उन्मुख कौशल विकसित होगा।
- छात्र विषय, माध्यम एवं प्रकृति के अनुरूप फ़ोटोग्राफ़ी सम्बन्धी तकनीकी कौशल विकसित होगा।
- छात्र 'प्रिंट और इलेक्ट्रॉनिक माध्यमों में फ़ोटो शूट प्रविधि में प्रशिक्षित होंगे।

1. फोटो पत्रकारिताः परिचय 3+1 x 3 = 9 + 3 (1 से 3 सप्ताह)

- फोटो पत्रकारिता का स्वरूप एवं फोटो पत्रकार के गुण
- फोटोग्राफी के मूलभूत सिद्धांत
- फोटो पत्रकारिता के क्षेत्र एवं संभावनाएँ

2. फोटोग्राफी का तकनीकी पक्ष 3+1 x 3 = 9 + 3 (4 से 6 सप्ताह)

- फोटो शूट प्रविधि - प्रकाश - व्यवस्था स्टूडियो के अंदर और बाहर
- फोटोग्राफी : कैमरा, सम्पादन, स्पैशल इफेक्ट्स
- शॉट्स के प्रकार - रोल कैमरा, फ्रेम, शॉट, कैमरा एंगल, वाइड शॉट, लॉन्ग शॉट, मिड शॉट, क्लोज शॉट, डिजीटल कैम क्लोज अप शॉट, एक्सट्रीम क्लोजअप शॉट, टू,

हिन्दी - विभाग
दिल्ली विश्वविद्यालय

शॉट, ओवर द शोल्डर शॉट, मूबिंग शॉट, रिवर्स शॉट, ट्रैकिंग शॉट, जूम शॉट पेन शॉट, टिल्ट शॉट, टिल्ट एड पैन शॉट, लो एंड हाई एगल शॉट स्टॉक शॉट प्वाइंट ऑफ व्यू फेरिंग

3. फोटोग्राफी का रचनात्मक पक्ष **3+1 x 3 = 9 + 3 (7 से 9 सप्ताह)**

- फोटोग्राफी का कलात्मक रूप
- फोटोग्राफी रिसर्च एवं समीक्षा
- फीचर, समाचार, रिपोर्ताज और डॉक्यूमेंट्री में फोटोग्राफी का महत्त्व

4. फोटोग्राफी का क्षेत्र और संपादन **3+1 x 3 = 9 + 3 (10 से 12 सप्ताह)**

- विभिन्न माध्यमों के लिए फोटोग्राफी
- फोटोग्राफी के प्रकार
- फोटोग्राफी और वीडियो सम्पादन

प्रायोगिक कार्य : **3+1 x 3 = 9 + 3 (13 एवं 14 सप्ताह)**

1. खेल या पर्यटन से सम्बंधित 10 फोटो का निर्माण।
2. प्रिंट मीडिया के लिए फोटोशूट और कैप्शन तैयार करना।
3. आउटडोर शूटिंग और पर्यटन डॉक्यूमेंट्री तैयार करना।
4. किसी एक फोटो प्रदर्शनी का भ्रमण और साक्षात्कार के आधार पर एक परियोजना कार्य तैयार करना।
5. किसी एक सामाजिक विषय पर फोटो डाक्यूमेंट्री तैयार करना।

संदर्भ पुस्तकें :

1. प्रसारण और फोटो पत्रकारिता, ओम गुप्ता, कनिष्क प्रकाशन
2. संचार और फोटो पत्रकारिता, रमेश मेहरा, तक्षशिला प्रकाशन

हिन्दी - विभाग
दिल्ली विश्वविद्यालय

3. फोटो पत्रकारिता, नवल जायसवाल, सामयिक प्रकाशन
4. प्रकाश लेखन और फोटो पत्रकारिता, गुलाब कोठारी, पत्रिका प्रकाशन
5. फोटो जर्नलिज्म, बी. के. देशपांडे, सोनाली पब्लिकेशन
6. फोटो जर्नलिज्म एंड कम्युनिकेशन टेक्नोलॉजी, पंकज सेठी, नवयुग पब्लिशर्स एंड डिस्ट्रीब्यूटर

Teaching-Learning Process (शिक्षण प्रशिक्षण प्रक्रिया)

इस पाठ्यक्रम के अध्ययन-अध्यापन के दौरान निम्नलिखित प्रक्रिया को अपनाया जाएगा –

कक्षा में विषय आधारित व्याख्यान, सामूहिक चर्चा, सरल से जटिलतर अध्यापन की ओर उन्मुखता, जटिल विषयों पर कक्षा के अलावा विषय विशेषज्ञों के व्याख्यान और फोटो कार्यशाला का आयोजन, कक्षा में इंटरएक्टिव मोड में अध्यापन, स्मार्ट क्लासरूम का प्रयोग, समाचार रिपोर्ट और फोटो फीचर तैयार करना, भारतीय संस्कृति पर आधारित फोटो प्रदर्शनी का अवलोकन, आउट्डोर शूटिंग का उपयोग करते हुए भारत बोध पर एक डाक्यूमेंट्री निर्माण, लिखित परीक्षा, विशेष रिपोर्ट बनवाना, सर्वेक्षण करवाना, फील्ड अध्ययन।

हिन्दी - विभाग
दिल्ली विश्वविद्यालय

1.5 (क) मुद्रित माध्यमों की पृष्ठ सज्जा (SEC)

Course Objective

- पत्रकारिता के क्षेत्र में पृष्ठ सज्जा की प्रक्रिया को समझाना।
- डिजानिंग की व्यावहारिक समझ विकसित करना।
- डमी निर्माण सिखाना।
- विविध पृष्ठों की साज-सज्जा के तकनीकी पहलुओं से अवगत कराना।

Course Learning Outcomes

- रोज़गारपरक कौशल विकसित होगा।
- पृष्ठ सज्जा के तकनीकी पक्ष की जानकारी होगी।
- पृष्ठ सज्जा निर्माण की आधारभूत समझ विकसित होगी।
- पृष्ठ सज्जा में फ़ोटो, कार्टून, रेखाचित्र की उपादेयता के उपयोग में दक्ष होंगे।

1. पृष्ठ सज्जा अवधारणा एवं परिचय **2+1 x 4 = 8 + 4 (1 से 4 सप्ताह)**

- पृष्ठ सज्जा की अवधारणा, आवश्यकता एवं महत्त्व
- पृष्ठ सज्जा के तत्त्व एवं सिद्धान्त
- पृष्ठ सज्जा की प्रक्रिया

2. पृष्ठ सज्जा तकनीक **2+1 x 4 = 8 + 4 (5 से 8 सप्ताह)**

- पृष्ठ सज्जा के रूप निर्धारक तत्त्व, ले आउट डिज़ाइनिंग
- दृश्य संचार तथा टाइप के प्रकार और संयोजन
- चार्ट, रेखाचित्र, ग्राफ, कार्टून, फ़ोटो चयन, फ़ोटो सेटिंग, कैप्शन एवं उप कैप्शन लेखन

3. प्रायोगिक कार्य **2+1 x 5 = 10 + 5 (9 से 14 सप्ताह)**

- दैनिक हिंदी समाचार पत्र की पृष्ठ सज्जा

- मासिक या पाक्षिक पत्रिका की डिजाइनिंग
- समाचार पत्र में फोटो चयन, संपादन एवं सेटिंग

सहायक पुस्तकें :

1. ग्राफिक डिजाइन, नरेंद्र सिंह् यादव, राजस्थान हिंदी ग्रंथागार अकादमी
2. समाचार पत्र : मुद्रण और पृष्ठ सज्जा, श्याम सुंदर शर्मा, मध्यप्रदेश ग्रंथ अकादमी, भोपाल
3. संपादन कला, के. पी. नारायण, मध्यप्रदेश ग्रंथ अकादमी, भोपाल
4. तकनीक तेरे कितने आयाम, बालेंदु शर्मा दाधीच, प्रभात प्रकाशन
5. मुद्रित सामग्री प्रौद्योगिकी, एम. एन. लिडबड़े और चंद्रशेखर मिश्र, मध्यप्रदेश ग्रंथ अकादमी, भोपाल
6. समाचार फीचर, लेखन एवं संपादन कला, हरिमोहन, तक्षशिला प्रकाशन
7. संपादन के सिद्धांत, रामचंद्र तिवारी, आलेख प्रकाशन
8. समाचार सम्पादन और पृष्ठ सज्जा, डॉ. रमेश जैन, यूनिवर्सल बुक डिपो, जयपुर

Teaching-Learning Process (शिक्षण प्रशिक्षण प्रक्रिया)

इस पाठ्यक्रम के अध्ययन-अध्यापन के दौरान निम्नलिखित प्रक्रिया को अपनाया जाएगा –

कक्षा में विषय आधारित व्याख्यान, सामूहिक चर्चा, सरल से जटिलतर अध्यापन की ओर उन्मुखता, जटिल विषयों पर कक्षा के अलावा विषय विशेषज्ञों के व्याख्यान कक्षा में इंटरएक्टिव मोड में अध्यापन, स्मार्ट क्लासरूम का प्रयोग, समाचारपत्र की पृष्ठ सज्जा हेतु कार्यशाला का आयोजन, संबंधित कार्य हेतु सॉफ्टवेयर की जानकारी देना, पृष्ठ सज्जा प्रक्रिया का अभ्यास।

1.5 (ख) रेडियो कार्यक्रम और निर्माण प्रक्रिया (SEC)

Course Objective

- रेडियो कार्यक्रम के विभिन्न प्रारूप की जानकारी प्रदान करना।
- श्रव्य माध्यम के लिए लेखन कौशल विकसित करना।
- रेडियो के द्वारा भारतीय ज्ञान परम्परा का प्रसार करना।
- भारत के सांस्कृतिक परिप्रेक्ष्य में रेडियो हेतु कार्यक्रम निर्माण कराना।

Course Learning Outcomes

- रेडियो हेतु कार्यक्रम निर्माण का कौशल विकसित होगा।
- श्रव्य माध्यम के लिए लेखन दक्षता का विकास होगा।
- भारतीय ज्ञान परम्परा का प्रचार-प्रसार होगा।
- रेडियो कार्यक्रमों हेतु पटकथा लेखन कर सकेंगें।

1. रेडियो फॉर्मेट 2+1 x 4 = 8 + 4 (1 से 4 सप्ताह)

- रेडियो न्यूज़ फॉर्मेट - ऑन स्पॉट रिपोर्ट, डॉक्यूमेंट्री, डॉक्यूड्रामा आदि
- रेडियो के लिए फोन इन कार्यक्रम
- रेडियो कार्यक्रम के निर्माण तत्त्व - संवाद कथन, ध्वनि प्रभाव, संगीत और मौन

2. कार्यक्रम योजना और निर्माण प्रक्रिया 2+1 x 4 = 8 + 4 (5 से 8 सप्ताह)

- प्री-प्रोडक्शन
- प्रोडक्शन – रिकॉर्डिंग, साउंड मिश्रण, संपादन
- पोस्ट प्रोडक्शन - पब्लिसिटी डिस्ट्रीब्यूशन

3. प्रायोगिक कार्य 2+1 x 5 = 10 + 5 (9 से 14 सप्ताह)

1. रेडियो साक्षात्कार का प्रारूप तैयार करना
2. रेडियो के लिए 5 मिनट का आंखों देखा हाल प्रस्तुत करना

हिन्दी - विभाग दिल्ली विश्वविद्यालय

3. महिला, बच्चे, युवा, बुजुर्ग वर्ग हेतु किसी रेडियो कार्यक्रम की पटकथा का प्रारूप तैयार करना
4. किसी एक सामाजिक विषय पर पार्श्व-ध्वनि (वॉयस-ओवर) तैयार करना

सहायक पुस्तकें :

1. रेडियो और दूरदर्शन पत्रकारिता, डॉ. हरिमोहन, तक्षशिला प्रकाशन
2. रेडियो नाटक की कला, डॉ. सिद्धनाथ कुमार, राधाकृष्ण प्रकाशन
3. रेडियो वार्ताशिल्प, डॉ सिद्धनाथ कुमार, राधाकृष्ण प्रकाशन
4. रेडियो लेखन, मधुकर गंगाधर, बिहार हिन्दी ग्रंथ अकादेमी, पटना
5. दृश्य- श्रव्य एवं जनसंचार माध्यम, कृष्ण कुमार रत्तू, राजस्थान हिन्दी ग्रंथ अकादेमी, जयपुर
6. रेडियो प्रसारण, कौशल शर्मा, प्रभात प्रकाशन, दिल्ली

Teaching-Learning Process (शिक्षण प्रशिक्षण प्रक्रिया)

इस पाठ्यक्रम के अध्ययन-अध्यापन के दौरान निम्नलिखित प्रक्रिया को अपनाया जाएगा –

कक्षा में विषय आधारित व्याख्यान, सामूहिक चर्चा, सरल से जटिलतर अध्यापन की ओर उन्मुखता, जटिल विषयों पर कक्षा के अलावा विषय विशेषज्ञों के व्याख्यान और रेडियो कार्यक्रम निर्माण प्रक्रिया का व्यावहारिक प्रशिक्षण, रेडियो कार्यशाला का आयोजन, कक्षा में इंटरएक्टिव मोड में अध्यापन, स्मार्ट क्लासरूम का प्रयोग, रेडियो समाचार बुलेटिन, रेडियो वार्ता एवं रेडियो साक्षात्कार, रेडियो विज्ञापन, जिंगल्स का निर्माण।

हिन्दी - विभाग
दिल्ली विश्वविद्यालय